आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के रचयिता का परिचय

1. हम–तुम, सब मनुष्यमात्र विनाशी देह नहीं हैं।

2. हम सब मन–बुद्धि सहित ज्योतिबिंदुरूप अविनाशी आत्माएँ अपनी–2 भरी–पूरी भृकुटि में विराजमान हैं; क्योंकि सिर्फ भृकुटि में ही गोली मारने से फौरन मृत्यु हो जाती है और आत्मा की यादगार बिंदी भी भृकुटि में ही लगाई जाती है।

3. सूक्ष्म ज्योतिबिंदु आत्माओं के बाप परमपिता शिव भी ज्योतिर्मय अणुरूप अति सूक्ष्म ज्योतिबिंदु ही हैं।

4. सभी आत्माओं के बीच तुरीया पार्टधारी एकमात्र परमपिता शिव ही जन्म–मरण के चक्र से न्यारे हैं। इसी कारण से वे विदेही निराकारी हैं और त्रिकालदर्शी होने से "गॉड इज़ वन, ट्रुथ इज़ गॉड" कहे जाते हैं। वही 'सत्यम्–शिवम्–सुंदरम्' सृष्टि के आदि सतयुग के स्वर्गीय सत्य सनातन धर्म वाले अविनाशी धर्मखंड भारत में दैवी राज्य की स्थापना और कलहयुगी अनेकों विनाशी धर्मखण्डों या झूठखंडो के विनाशी 'सर्व धर्मों' का परित्याग करा देते हैं।

5. इन दोनों स्थापना–विनाश के महान कार्यों की सम्पन्नता के लिए निराकार गॉडफादर शिव मनुष्य–सृष्टि–वृक्ष के सारे ही धर्मों में परमप्रसिद्ध बीजरूप आदिपिता आदिदेव/ शंकर/आदम/अर्जुन/एडम या जैनियों के आदिनाथ नामक शरीर रूपी रथ में गीता के 'प्रवेष्टुं' शब्दानुसार प्रवेश करते हैं और उनके द्वारा अन्यान्य देहधारी धर्मपिताओं की तरह ओरली सच्चा गीता–ज्ञान सुनाते तो हैं; परंतु कोई धर्मशास्त्र लिखते नहीं।

6. इसी सच्चे गीता–ज्ञान से ही सारे संसार में बड़ा भारी ज्ञान का रिवोल्युशन रूपी महाभारी महाभारत का परमप्रसिद्ध तृतीय विश्वयुद्ध हो जाता है। यह युद्ध कोई 16 कला संपूर्ण देवता कृष्ण, जो आज भी यादगार मंदिरों में बच्चा (बुद्धि) के रूप में पूजा जाता है, उसके जानकारी से नहीं होता। वह तो सम्पूर्ण निर्विकारी बच्चे के रूप से मंदिरों में पूजा जाता है। मनुष्य को देवता बनाने वाले तो निराकार शिव भगवान ही हैं, जो कलातीत और कल्पांतकारी गाए जाते हैं। महाभारत के तृतीय विश्वयुद्ध के थोड़े समय बाद ही रशियन्स–अमेरिकन्स रूपी यूरोपीय (वृष्णिवंशी) यादवों के बुद्धि रूपी पेट से निकले मिसाइलों रूपी मूसलों से सारे ही विनाशी–रशिया, चीन, अमेरिका, यूरोप आदि धर्मखंडों का अंतिम चतुर्थ विश्वयुद्ध द्वारा विनाश हो जाता है और सिर्फ अविनाशी धर्मखंड भारत ही बच जाता है, जहाँ निराकार गॉडफादर शिव विनाश से पहले ही परमधाम/सुप्रीमएबोड/सोल वर्ल्ड या अर्श से फर्श की पवित्र धरणी भारत में खुदा नाम से खुद ही आकर एडम/आदम के एकव्यापी अर्जुन के शरीर रूपी रथ के द्वारा पैराडाइज़/जन्नत या स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाकी तो सभी धर्मपिताएँ अपना–2 देह रूपी रथ होने के कारण (स्व+रथी=) स्वार्थी होते हैं। एक ही शिव भगवान हैं जो सदाकाल ज्योतिबिंदु आत्मा की स्वस्थिति में स्थित रहने के कारण स्वर्ग बनाते हैं। बाकी तो सभी नर नरक ही बनाते हैं।

7. कृष्ण ने द्वापर के अंत में कोई महाभारत युद्ध कराकर पापी कलियुग की स्थापना नहीं की थी। खास भारत में तृतीय विश्वयुद्ध कराने और यूरोपीय यादवों में मूसलों या बम्बों का चतुर्थ विश्वयुद्ध कराने का एकमात्र टाइटलधारी तो 'कलातीत कल्याण कल्पांतकारी' हर–2 बम–2 महादेव शिवशंकर ही गाए हुए हैं।

8. 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' का नाम बदलकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम डालने के लिए माउंट आबू से चलाई गई शिवबाबा की मु.ता.20.3.74 पृ.4 के अंत में संगठित चतुर्मुखी ब्रह्मा–मुख द्वारा दिया गया स्पष्ट आदेश

इस प्रकार है– "गॉडफादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे, इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे। फिर बोर्ड में भी वह (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी) अक्षर हटाकर यह स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी लिख देंगे। ट्राई करके देखो। लिखो 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी'। इनकी एम–ऑब्जेक्ट यह है। दिन–प्रतिदिन तुम्हारे म्युज़ियम, चित्रों आदि में भी चेन्ज होती जावेगी। फिर सब सेण्टर्स पर लिखना पड़ेगा– 'गॉड फादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी'।

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025